

नाट्यम् 91-94

रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य



नाट्यम्

91-94

रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सज्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम, रामहेतु गौतम
शशिकुमार सिंह, किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (म.प्र.)

नाट्यम् 91-94, अक्टूबर 2019-सितम्बर 2020
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य (शताब्दी स्मरण विशेषांक)
ISSN : 2229-5550

UGC Approved Journal Sr. No. 41002

नाट्य परिषद् (पंजीकरण क्र. 100066)

संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-297149

सदस्यता शुल्क :

विशेषांक - 200/- रु.

प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.

आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.

आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.

इस अंक का मूल्य - 200/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद्, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003

e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com, Mob : +919425656284

© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, अमन प्रकाशन नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति
के लिए नाट्य परिषद् से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से नाट्य परिषद्, संपादक या संपादक मंडल की सहमति
अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रुपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुराने

18.	नन्दगौतमीयम्: एकविवेचन शालिनी सक्सेना	143
19.	नवीन उद्भावनाओं का अतिरंजित चित्रण और विश्वविजय नाटक आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	151
20.	नन्दगौतमीयम् में अलंकार-योजना सन्दीप कुमार यादव	158
21.	मानवीय उत्थान में मालवीय जी की भूमिका : आचार्य रामजी उपाध्याय की दृष्टि में किरण आर्या	162
22.	आचार्य रामजी उपाध्याय के नाटकों में जीवन दृष्टि अर्चना जोशी	169
23.	आचार्य रामजी उपाध्याय के नाटकों में मानव-मूल्य रामाश्रय राजभर	177
24.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में लोकहित की प्रतिष्ठा नौनिहाल गौतम	185
25.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में लोकहित चिन्तन प्रभातकुमार सिंह	190
26.	रामजी उपाध्याय के नाटकों की दार्शनिक समीक्षा रवीन्द्र कुमार पंथ	196
27.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में गंगा माहात्म्य निकिता यादव	202
28.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में रूढ़ियों का निराकरण प्रभाशंकर शुक्ल	208
29.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में रस पूनम यादव	214
30.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में नायक-नायिका अरुण कुमार निषाद	219
31.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में रीति-विचार शिवपूजन चौरसिया	225
32.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में औचित्य नीरज कुमार	233
33.	नन्दगौतमीयम् में विश्वशान्ति मैत्रयी कुमारी	241
34.	रामजी उपाध्याय के नाटकों में भाषिक सौन्दर्य सरोज कौशल	245
●	लेखकों के पते	254

नवीन उद्भावनाओं का अतिरंजित चित्रण और विश्वविजय नाटक

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

आधुनिक संस्कृत साहित्य के पुरोधा डॉ. रामजी उपाध्याय बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्य थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों तथा अपने समकालीन जीवन और समाज के विविध संदर्भों पर आधारित अनेक गद्य कृतियों की सर्जना की है। उपन्यास और नाटक, आलोचना, काव्यशास्त्र के क्षेत्र में भी उनकी सर्जना को संस्कृत के विद्वानों की भरपूर सराहना मिली है। उनके उत्कृष्ट सृजनात्मक नाट्य लेखन को आज नये सिरे से परखने की नितांत आवश्यकता है। हर सर्जक अपने समय के ज्वलंत प्रश्नों से रू-ब-रू होता है और ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथा चरित्रों, प्रसंगों को नयी सोच, नये संदर्भ और नयी भाव चेतना के साथ सृजित करने का प्रयास करता है। परंपरा से प्राप्त ज्ञान और युग चेतना को अपने समय की कसौटी पर परखने में उसकी लेखनी सिद्ध होती है।

आचार्य रामजी उपाध्याय ने भी कुछ ऐसा ही किया जिससे उनकी नाट्य कृतियों की प्रशंसा और आलोचना दोनों ही की गयी है। अनेक विद्वान उनकी अतिरंजित कल्पनाशीलता से असहमत होते भी नजर आते हैं। उनके लेखन पर यदा-कदा प्रश्नचिह्न लगाये गये हैं। ध्यातव्य है कि हर युग का रचनाकार पुराकथाओं एवं पुराचरित्रों को अपने युग संदर्भ में प्रासंगिक बनाता है। डॉ. उपाध्याय ने संवेदना, नयी दृष्टि, नयी विचारभूमि, नयी भावना से नये अर्थ की प्रतिष्ठा कर अपनी प्रतिमा से सभी को चमत्कृत करने का प्रयास किया है। उन्होंने मिथकीय चरित्रों को अपने मनोनुकूल गढ़ने का प्रयास किया है।